पाठ - उपभोक्तावाद की संस्कृति

शब्दार्थ -

1. विशिष्ट जन	-	खास लोग
2. सूक्ष्म	-	बहुत छोटा
3. चमत्कृत	-	चमत्कार से युक्त
4. आस्था	-	श्रद्धा
5. वर्चस्व	-	प्रधानता
6. उपभोक्ता	-	उपभोग करने वाला
7. प्रतिमान	-	मानदंड
8. ह्रास	-	गिरावट
9. वशीकरण	-	वश में करना
10.स्वार्थ	-	अपना भला
11.परमार्थ	-	दूसरों का भला
12.तत्कालिक	-	उसी समय
13.अवमूल्यन	-	गिरावट
14.सांमत	-	जमींदार
15.हास्यास्पद	-	हंसी उत्पन्न करने वाला
16.बहुविज्ञापित	-	बहुत अधिक प्रचारित
17.उपभोग	-	काम में लाना
18.अस्मिता	-	पहचान अ
19.क्षरण	-	कमी आना
20.अपव्यय	-	फिजूल खर्ची

प्रश्न-अभ्यास

1. लेखक के अनुसार जीवन में 'सुख' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- लेखक के अनुसार आज की उपभोक्तावादी संस्कृति में सुख का अभिप्राय हैं उत्पादों का अधिकाधिक उपभोग करना। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि जिन उत्पादों का उपभोग करने से हमारी इच्छा पूर्ति होती है वही सुख कहलाता है। अतः उपभोग भोग ही आज सुख कहलाता है।

egyanarchive

2. आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रही है?

उत्तर- आज की उपभोक्तावादी संस्कृति हमारे दैनिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। लोग विज्ञापन की चमक दमक देखकर वस्तुएँ खरीदते हैं, उनकी गुणवत्ता की ओर कोई ध्यान नहीं देते। समाज के समृद्ध वर्ग से आम आदमी भी होड़ करता हुआ दिखाई देता है। फलस्वरूप परम्पराओं में गिरावट आती जा रही हैं। इस प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ में हम अपनी वास्तविकता को भूलकर बाहरी दिखावे की तरफ ध्यान दे रहे हैं। विज्ञापन की दुनिया ने अपने मोहजाल में फंसा लिया है।

3. गांधी जी ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती क्यों कहा है?

उत्तर- गाँधी जी ने उपभोक्ता संस्कृति को हमारे समाज के लिए चुनौती इसलिए कहा है क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करने से हमारी शांति तथा विषमता बढ़ती जा रही है। हमारी स्वस्थ परम्पराएँ तथा स्वस्थ मूल्य खतरे में पड़ गए हैं। गाँधी जी चाहते थे कि हम अपनी परम्पराओं पर दृढ़ बने रहें ओर केवल स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों को ही अपनाएं। हमें बिना सोचे समझे विदेशी संस्कृति का अनुकरण नहीं करना चाहिए अन्यथा हमारा समाज पथभष्ट्र हो जायेगा।

4. आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) जाने-अनजाने आज के माहौल में आपका चरित्र भी बदल रहा है और आप उत्पाद को समर्पित होते जा रहे हैं।

उत्तर- आज हमारा समाज उपभोग भोग को ही सुख मान रहा है। इसलिए वह अधिकाधिक भौतिक सुख-सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील है। फलस्वरूप आज के उपभोक्तावादी युग में मानव * के चरित्र में परिवर्तन आने लगा है। न चाहते हुए भी आदमी उत्पादों के प्रति समर्पित होते जा रहे हैं और उनके भोग को ही सच्चा सुख मान रहे है-

(ख) प्रतिष्ठा के अनेक रूप होते हैं, चाहे वे हास्यास्पद ही क्यों न हो।

उत्तर- लेखक का विचार है कि लोग समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए अनेक प्रकार के काम करते हैं। उनके कुछ काम तो बड़े ही मूर्खतापूर्ण होते हैं। इससे उनकी प्रतिष्ठा नहीं बढ़ती अपितु उन्हें देखने वालों की हंसी आती है। लोग उनका मजाक उड़ाते हैं।

रचना और अभिव्यक्ति

5. कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी हो या न हो, लेकिन टी.वी. पर विज्ञापन देखकर हम उसे खरीदने के लिए अवश्य लालायित होते हैं? क्यों?

उत्तर- टी. वी. पर किसी भी वस्तु का विज्ञापन बड़े ही आकर्षक रूप में प्रस्तुत किया जाता है। विज्ञापन को देखकर हम उस वस्तु की ओर आकर्षित हो जाते हैं और उस वस्तु को खरीदने के लिए लालायित हो उठते हैं। हम यह भी नहीं सोच

egyanarchive

पाते कि क्या वह वस्तु हमारे लिए उपयोगी है या नहीं। लेकिन विज्ञापन का प्रस्तुतीकरण ही हमें उसे खरीदने के लिए मजबूर कर देता है।

6. आपके अनुसार वस्तुओं को खरीदने का आधार वस्तु की गुणवत्ता होनी चाहिए या उसका विज्ञापन? तर्क देकर स्पष्ट करें।

उत्तर- हमारे विचार से वस्तुओं को खरीदने का आधार उनकी गुणवत्ता होनी चाहिए न कि उनका विज्ञापन। सर्वप्रथम हमें उस वस्तु की उपयोगिता के बारे में सोचना चाहिए। फिर यह देखना चाहिए कि उस वस्तु में आवश्यक गुण हैं अथवा नहीं। विज्ञापन मात्र से प्रभावित होकर हमें कुछ नहीं खरीदना चाहिए। कारण यह है कि विज्ञापन द्वारा उत्पादक अपनी वस्तु को ही लुभावने रूप में ग्राहकों के समक्ष रखता है। उपभोक्ता उसकी बाहरी चमक दमक देखकर उसे खरीद लेता है। उपभोक्ता न तो वस्तु की उपयोगिता को देखता है न ही उसके गुणों को। अतः यदि कोई वस्तु हमारे लिए उपयोगी नहीं है उसकी गुणवत्ता भी संतोषजनक नहीं है तो उसे नहीं खरीदना चाहिए।

7. पाठ के आधार पर आज के उपभोक्तावादी युग में पनप रही 'दिखावे की संस्कृति' पर विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर- आज के उपभोक्तावादी युग में दिखावे की संस्कृति पनप रही है। यदि हमारे पड़ौसी के पास कार है तो हम सोचते है कि हमारे पास उससे बड़ी कार होनी चाहिए। भले की उसके लिए हमें बैंक से कर्जा लेना पड़े या गलत उपाय अपनाने पड़ें। यदि एक व्यक्ति ने विवाह में पाँच लाख खर्च किया है तो दूसरा व्यक्ति अपनी शान दिखाने के लिए दस लाख खर्च करना चाहता है। इसके लिए लोग कर्जा तक ले लेते हैं। हर आदमी अपने घर में बढ़िया फर्नीचर, बढ़िया टेलीविजन तथा म्यूजिक सिस्टम रखना चाहता है। देखादेखी लोग एक दूसरे से होड लगा रहे हैं। और दिखावे की संस्कृति पनपती जा रही है।

egyanarchive

8. आज की उपभोक्ता संस्कृति हमारे रीति-रिवाजों और त्योहारों को किस प्रकार प्रभावित कर रही है? अपने अनुभव के आधार पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर- एक समय था जब लोग अपने ही घर में यज्ञ करके बच्चे का जन्मदिन मना लेते थे। लेकिन आजकल जन्मदिन मनाने से पहले एक कीमती निमन्त्रण पत्र छपवाया जाता है और फिर उसे सगे-सम्बन्धियों तथा मित्रों में बांटा जाता है। उपभोक्ता संस्कृति के बढ़ते हुए चरण के फलस्वरूप आज सितारा होटलों में जन्मदिन का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर केक काटने की रस्म से पहले शहनाई वादन, संगीत, नृत्य आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। तत्पश्चात् केक काटने की रस्म अदा की जाती है। बच्चे के ननिहाल से सोने, हीरे के उपहार दिए जाते हैं। इस अवसर पर आमंत्रित लोग भी बच्चे को बहुमूल्य उपहार भेंट करते हैं। इसके बाद भोजन किया जाता है। जिसमें तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जाते हैं। इस दिखावे के कारण लोग बच्चे के जन्मदिन पर लाखों रुपया खर्च कर देते है। ऐसे ही एक जन्मदिन में मैं दिल्ली स्थित होटल में गया। वहां पर बाहरी सजावट तथा अन्य खान-पान देखकर मैं दंग रह गया।

भाषा-अध्ययन

9. धीरे-धीरे सब कुछ बदल रहा है।

इस वाक्य में 'बदल रहा है' क्रिया है। यह क्रिया कैसे हो रही है-धीरे-धीरे। अतः यहाँ धीरे-धीरे क्रिया-विशेषण है। जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जहाँ वाक्य में हमें पता चलता है क्रिया कैसे, कब, कितनी और कहाँ हो रही है, वहाँ वह शब्द क्रिया-विशेषण कहलाता है।

(क) ऊपर दिए गए उदाहरण को ध्यान में रखते हुए क्रिया-विशेषण से युक्त लगभग पाँच वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए।

उत्तर-

(i) उत्पादन बढ़ाने पर जोर है चारों ओर।

(ii) जगह-जगह बूटिक खुल गए हैं, नए-नए डिजाइन के परिधान बाजार में आ गए हैं।

(iv) संगीत की समझ हो या नहीं, महँगा म्यूजिक सिस्टम जरूरी है।

(iii) जो आपको लुभाने की जी तोड़ कोशिश में निरंतर लगी रहती है।

(v) अमेरिका में आज जो हो रहा है वह कल भारत में भी हो सकता है।

(ख) धीरे-धीरे, ज़ोर से, लगातार, हमेशा, आजकल, बकाक्षर, ज्यादा, यहाँ, उधर, बाहर - हुन क्रिया विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए।

उत्तर-

1. **धीरे-धीरे -**
   धीरे-धीरे काम मत करो नहीं तो काम समाप्त नहीं होगा।
2. **जोर से -**
   पड़ौसी जोर से चिल्लाया-चोर-चोर......
3. **लगातार -**
   मोहन लगातार तीन घंटे से पढ़ रहा है।
4. **हमेशा -**
   तुम्हें हमेशा जल्दी लगी रहती है।
5. **आजकल -**
   आजकल उपभोक्ता संस्कृति बढ़ रही है।
6. **कम -**
   यह दुकानदार हमेशा कम तोलता है।
7. **ज्यादा -**
   मुझे चीनी ज्यादा चाहिए।

egyanarchive

8. **यहाँ -**

यहाँ बड़ी सर्दी हो रही हैं।

9. **उधर -**

उधर पार्क के पास झगड़ा हो रहा है।

10. **बाहर -**

तुम जरा बाहर आओ मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।

(ग) नीचे दिए गए वाक्यों में से क्रिया-विशेषण और विशेषण शब्द छाँटकर अलग लिखिए-

वाक्य	**क्रिया-विशेषण**	**विशेषण**
(1) कल रात से निरंतर बारिश हो रही है।		
(2) पेड़ पर लगे पके आम देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया।		
(3) रसोईघर से आती पुलाव की हलकी खुशबू से मुझे ज़ोरों की भूख लग आई।		
(4) उतना ही खाओ जितनी भूख है।		
(5) विलासिता की वस्तुओं से आजकल बाजार भरा पड़ा है।		

उत्तर-	**क्रिया विशेषण**	**विशेषण**
1	निरंतर	
2.		पके
3.	जोरों की	खुशबू
4.	उतना ही	
5.	आजकल	विलासिता

egyanarchive

पाठेतर सक्रियता

प्रश्न - 'दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों का बच्चों पर बढ़ता प्रभाव' विषय पर अध्यापक और विद्यार्थी के बीच हुए वार्तालाप को संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर -

शिक्षक - बच्चों! अच्छे स्वास्थ्य के लिए हरी सब्जियां लाभदायक है। इनमें सभी विटामिन होते है।

मोहन - सर, बरगर खाने में क्या बुराई है उसमें भी तो कार्बोहाइड्रेटस होते हैं।

शिक्षक - बरगर एक जंक फूड है। यह शरीर के लिए उतना लाभदायक नहीं है जितनी की सब्जियाँ।

सुशील - सर, हमें फल भी तो खाने चाहिएं।

शिक्षक - हाँ। फल भी स्वास्थ्य के लिए जरूरी हैं। हम फल भी खा सकते हैं।

मोहन - सर, हम लिम्का भी तो पी सकते हैं।

शिक्षक - लिम्का, शरीर के लिए लाभकारी नहीं है। इसके स्थान पर घर पर सेब, संतरे अथवा गाजर का रस निकाल कर पीना चाहिए।

प्रश्न - इस पाठ के माध्यम से आपने उपभोक्ता संस्कृति के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की। अब आप अपने अध्यापक की सहायता से सामंती संस्कृति के बारे में जानकारी प्राप्त करें और नीचे दिए गए विषय के पक्ष अथवा विपक्ष में कक्षा में अपने विचार व्यक्त करें।

क्या उपभोक्ता संस्कृति सामंती संस्कृति का ही विकसित रूप है?

उत्तर - सामंती संस्कृति और उपभोक्ता संस्कृति दोनों ही महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाओं को व्यक्त करते हैं, लेकिन इनके अंतर में विशेषताएँ हैं। सामंती संस्कृति विशेष रूप से समाज में व्यक्तियों की स्थिति और प्रतिष्ठा को बताती है, जबकि उपभोक्ता संस्कृति उनकी वस्तुओं और सेवाओं के प्रयोग पर ध्यान केंद्रित करती है।

उपभोक्ता संस्कृति का विकास मुख्य रूप से औद्योगिक क्रांति और व्यापारीकरण के साथ हुआ है, जिससे उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने और उनकी पसंदों और आशाओं को समझने के लिए विभिन्न उत्पादों और सेवाओं का विकास हुआ है। इसमें व्यापारी और उपभोक्ता के बीच संबंधों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जहां व्यापारी उपभोक्ताओं की मांगों और प्रत्याशाओं को समझकर उन्हें पूरा करने का प्रयास करते हैं।

वहीं, सामंती संस्कृति व्यक्तिगत और सामाजिक पहचान को जातीय, सामाजिक, और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से परिभाषित करती है। इसमें स्थिति, संस्कार, और परंपरागत अनुशासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामंती संस्कृति में व्यक्तियों के सामाजिक स्थान को अंदरूनी और बाह्य प्रकारों से निर्धारित किया जाता है, जबकि उपभोक्ता संस्कृति उनकी व्यक्तिगत चुनौतियों और अवसरों के साथ संबंधित होती है।

इस प्रकार, उपभोक्ता संस्कृति को सामंती संस्कृति का एक पहलू माना जा सकता है, जो कि उन्हीं सामाजिक संरचनाओं का परिणाम हैं जिन्होंने सामंती संस्कृति को बनाया है। यहां उपभोक्ता संस्कृति की उत्पत्ति और विकास में सामंती संस्कृति की भूमिका समझना महत्वपूर्ण होता है।

egyanarchive

प्रश्न - आप प्रतिदिन टी.वी. पर ढेरों विज्ञापन देखते-सुनते हैं और इनमें से कुछ आपकी जुबान पर चढ़ जाते हैं। आप अपनी पसंद की किन्हीं दो वस्तुओं पर विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर- [दृश्य: एक व्यस्त शहर में एक युवा लड़का जिम्मेदारी भरे दिनचर्या में डूबा हुआ है। उसका चेहरा थका हुआ दिखता है, लेकिन उसकी आँखें उत्साह और ज्ञान से भरी हैं।]

Voiceover: "क्या आप भी अपने व्यस्त दिनचर्या में पढ़ाई का समय निकालने में सक्षम नहीं हो पाते? अब आइए आपके जीवन को आसान बनाएं।"

[दृश्य: लड़का अपने स्मार्टफोन पर बुक रीडिंग एप्लिकेशन चला रहा है। उसकी आँखों में चमक और खुशी की झलक दिख रही है।]

Voiceover: "डाउनलोड करें और अपनी पसंदीदा किताबें अपने फोन पर पढ़ें, कहीं भी, कभी भी। अब पढ़ाई का अनुभव जीवन के हर पल में!"

[अंतिम दृश्य: लड़का एक पुस्तक पढ़ते हुए और मुस्कान से भरे चेहरे के साथ आराम से बैठा हुआ है।]

Voiceover: "बुक रीडिंग एप्लिकेशन - ज्ञान की दुनिया आपके हाथों में। अब डाउनलोड करें!"

egyanarchive